ISSN-2347-5897

# INTERNATIONAL JOURNAL OF BHOPAL

**An International Research Refereed Journal For All Subject**

**Year-6** **Volume-IV** **Oct. - Dec. 2018**

Special Issue

One Day National Research Conference

on

## Different Dimensions of Women Development

**29 December 2018**

**Organiser**
Dept. of Sociology
Govt. Narmada P. G. College
Hoshangabad (M.P.)
(Excellence Institute)

**Editor In Chief**
Dr. Sachin Awasthi
Email : journalbhopal@gmail.com
Contact : 9300929133, 9479906590

62. महिला विकास और सहकारिता 165-168
* कीर्ती सिंह

63. भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान 169-171
* देवेन्द्र विश्वकर्मा

64. महिला सशक्तिकरण हेतू कल्याणकारी योजना 172-173
* डॉ. उर्मिला सतोगिया ** नेहा मालवीय

65. "स्वतंत्रता के पूर्व एवं स्वतंत्रता के पश्चात् महिलाओं की स्थिति" 174-175
* करुणा पति त्रिपाठी

66. गोंड तथा कोरकू जनजातियों में प्राथमिक शिक्षा की योजनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन (बैतूल जिले के पाँच ग्रामों के विशेष संदर्भ में) 176-180
* डॉ. गीता चौहान

67. स्वतंत्रता के पूर्व एवं स्वतंत्रता के पश्चात् महिलाओं की स्थिति 181-183
* चन्द्रप्रभा जाटव

68. असंगठित क्षेत्र में अनु.जाति एवं जनजाति की कामगार महिलाओं का आर्थिक अध्ययन (राजगढ़ जिले के विशेष सन्दर्भ में) 184-188
* बनेसिंह वर्मा **डॉ प्रकाश चन्द्र रॉका

69. प्राचीन भारत में नारी की स्थिति (पन्ना जिले के विशेष संदर्भ में) 189-190
* डॉ. हंसा व्यास

70. स्वतंत्रता के पूर्व एवं स्वतंत्रता के बाद भारतीय महिलाओं की विविध रूपों का अध्ययन 191-193
* प्रभुदयाल यादव

71. इतिहास में नारी विद्रोह के भारतीय मंच 194-196
* डॉ. श्रद्धा पटेल

72. स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं में महिलाओं के विरूद्ध अपराध एवं कानून के प्रति जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छिंदवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में) 197-198
* कु. फरहत मंसूरी ** डॉ. अर्चना गौर

73. पंचायत स्तरीय चुनावी संस्कृति और महिलाएं 199-201
* मनोज कुमार गुप्ता

74. महिला सशक्तिकरण – समाज और देश को बेहतर बनाने का प्रयास 202-206
* जलज सेठी **डॉ. दीप्ती सेठी

75. महिलाएँ एवं पंचायती राज 207-208
* डॉ. माया अग्रवाल

76. नारी मुक्ति चेतना (भारतीय एवं पाश्चात्य संदर्भ में) 209-210
* डॉ. अंजना यादव

# स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं में महिलाओं के विरूद्ध अपराध एवं कानून के प्रति जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छिंदवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में)

**कु. फरहत मंसूरी**
शोधार्थी (समाजशास्त्र), बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

**डॉ. अर्चना गौर**
शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, शास. महाविद्यालय, नरेला, भोपाल (म.प्र.)

**सारांश –**

शोध पत्र में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं में महिलाओं के विरूद्ध अपराध एवं कानून के प्रति जागरूकता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शोध पत्र में मुख्य रूप से महिलाओं से संबंधित तीन अपराधों एवं कानून पर छात्राओं से चर्चा की गई है – घरेलू हिंसा, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा। स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की छात्रायें महिलाओं के विरूद्ध अपराध एवं कानूनों के प्रति जागरूक है या नहीं। इस विषय में प्रश्नोत्तर प्रणाली के माध्यम से जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। भारत जैसे विकासशील देशों में महिला शोषण की प्रकृति का कारण महिलाओं को समाज में दोयम दर्जा प्राप्त होना एवं दूषित मानसिकता है, जिसके कारण महिलायें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने में असफल रहती है। अतः महिलाओं को शोषण से बचाने एवं उनकी स्थितियों को ऊँचा उठाने के लिए नये कानून बनाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि सोच बदलने की एवं समाज में जागरूकता लाने की आवश्यकता है।

**प्रस्तावना –**

वर्तमान समय में महिलाओं के विरूद्ध अपराध एक अंतर्राष्ट्रीय चर्चा का विषय बना हुआ है। विश्व में महिला से संबंधित अपराधों का आंकड़ा दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। महिलाओं के विरूद्ध होने वाले अपराधों के लिए पुरूष प्रधान समाज और पुरूष मानसिकता तो जिम्मेदार है ही, साथ ही इसके लिए जिम्मेदार है हमारी सामाजिक परम्परा। पुरूषों ने अपनी सुविधा के लिए नियम आदर्श और धर्म के पाठ, मात्र स्त्रियों तक ही सीमित रखे और स्वयं के लिए उसने पूरी आजादी रख छोड़ी। सामाजिक कुरीतियों ने स्त्रियों को जी भरकर दलाया, उन्हें उत्पीड़ित किया और उनके साथि सभी प्रकार के नैतिक अनैतिक दुर्व्यवहार किए। आज के आधुनिक युग में भी परिस्थितियां नहीं बदली है। शायद ही कोई क्षेत्र ऐसा हो जिनमें महिलाओं की भागीदारी न हो। लेकिन कुछ महिलायें ऐसी भी है जो मानसिक शारीरिक हिंसा, भेदभाव की शिकार है।

शोध पत्र में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं में महिलाओं के विरूद्ध अपराध एवं कानून के प्रति जागरूकता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शोध पत्र में मुख्य रूप से तीन अपराधों एवं कानून पर छात्राओं से चर्चा की गयी है – घरेलू हिंसा, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा। इन अपराधों से आप भली भांति परिचित है ही। भारत जैसे विकासशील देशों में महिला शोषण की प्रकृति का कारण महिलाओं को समाज में दोयम दर्जा प्राप्त होना एवं दूषित मानसिकता है, जिसके कारण महिलायें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने में असफल रहती है। अतः महिलाओं को शोषण से बचाने एवं उनकी स्थितियों को ऊँचा उठाने के लिए नये कानून बनाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि सोच बदलने की एवं समाज में जागरूकता लाने की आवश्यकता है।

**उद्देश्य –**

1. स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं से घरेलू हिंसा के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
2. स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं से दहेज प्रथा (हत्या) की जानकारी प्राप्त करना।
3. स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं से भ्रूण हत्या की जानकारी प्राप्त करना।
4. स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं से अपराधों से बचने हेतु कानूनों की जानकारी प्राप्त करना।

घरेलू हिंसा अधिनियम मुख्य रूप से पति, पुरूष लिव इन पार्टनर या रिश्तेदारों द्वारा पत्नी, महिला लिव इन पार्टनर या घर में किसी भी महिला से की गई हिंसा से सुरक्षा के लिए बनाया गया है। इसमें पीड़ित या उसकी ओर से

ISSN : 2394-3580
VOLUME - 5 No. : 9 July - 2018

# Swadeshi Research Foundation

# A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Research Journal
SRF
Book Publication

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor - 3.9

Published by :
**Swadeshi Research Foundation & Publication**
Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

Scanned By Scanner Go

# CONTENTS


| S. No. | Paper Title | Author Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | CORPORATE SOCIAL RESPONSIBILITY AND SWACHH BHARAT ABHIYAN | Dr. Ajay Agrawal<br>Dr. Amitabh Pande<br>Poorva Pande Sharma | 1-4 |
| 2 | THE RELATIONSHIP BETWEEN EDUCATION AND SOCIAL MOBILITY OF WOMEN ON THE BASES OF THEIR WORK PROFILE | Dr. Deepika Gupta | 5-13 |
| 3 | Role of Education in Tribal Development | Abhinika Pandey | 14-17 |
| 4 | RURAL DEVELOPMENT IN INDIA PRE-INDEPENDENCE | Dr. Gulnar Vilku | 18-19 |
| 5 | The Issues and Threats lies in between the opportunities in Medical Tourism of India: A critical and suggestive analysis Of this untapped potential industry | Ajay Mishra<br>Dr. C.K. Buttan | 20-26 |
| 6 | THE CONCEPT OF ARTHANAREESAWAR IN ABROAD | K. KUMARESAN | 27-32 |
| 7 | A Study of Cost and Returns Paddyand Banana in Thoothukudi District | A. THILAGAVATHY | 33-41 |
| 8 | Glyceraldehyde 3 Phosphate Dehydrogenase : A Potent Housekeeping Gene of Caprine Fibroblast Cells | Sudhir Kumar Jain<br>Hemlata Jain<br>Bikash Chandra Sarkhel<br>Akhilesh Kumar Pandey | 42-45 |
| 9 | Financial Scheme and Credit Facility of Agriculture Produce | Dr. Anu Jain<br>Dr. Sunil Deshpandey | 46-50 |
| 10 | Evaluation of total saponin content in methanolic extracts of Cymbopogon citratus, Ocimum sanctum and Trigonella foenum-graecum : A comparative study | Deepali Sahu<br>Rashmi Vyas | 51-55 |
| 11 | Classification of Sachin Dev Burman's Few Film Song Based on Taal and Raga | Paheli Gope<br>Utpal Biswas | 56-60 |
| 12 | INCOME ANALYSIS OF MP TOURISM HOTELS IN MADHYA PRADESH | Banashree Das | 61-64 |
| 13 | ROLE OF EMPLOYEE SATISFACTION IN AN ORGANIZATION | Dr. Shalini Dubey | 65-67 |
| 14 | Critical Analysis of Direct Cost of Health Care in India | Dinesh Kumar Agrawal | 68-74 |
| 15 | An Existentialist Reading of John Steinbeck's Grapes of Wrath | Rajeev Ranjan Tigga | 75-78 |
| 16 | Positions of Pakistan-India on Third-Party Intervention | Ajaz Ahmad Khan | 79-85 |
| 17 | STANDING ORDERS AND GRIEVANCE PROCEDURE | Rashmi Singh | 86-88 |
| 18 | Bildungsroman is one of the most important genres for young adults | Geeta Warade | 89-96 |
| 19 | Quantum Chemical elucidation of itinerancy in Y (III) with Encompassing Ln (III) series | Nasreen Anjum Khan<br>Sarika bansod<br>S. N. Limaye | 97-101 |


Scanned By Scanner Go

**Table 2** The values for $K_1$ and $K_3$ coefficients.

Following given is a representative set of SPSS- output for the three coefficients.

| A set of out put of the free energy data subjected semi empirical equation using SPSS 11.0 ver package | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| Constant | Un standardized Coefficients | Std. Error | Standardized Coefficients | t | Sig. |
| | 2720.8 | 95.809 | | 28.399 | .000 |
| $E^0$ | 9.525 | 6.070 | .427 | 1.569 | .145 |
| $E^3$ | 1.161 | 7.349 | .070 | .158 | .877 |
| E | -32.162 | 50.126 | -.281 | -.642 | .534 |
| $E^1$ | -29.576 | -.029 | .977 | -.009 | 7.763E-08 |

The coefficient thus obtained were used to evaluate the extrastabilisation parameter $K_1\delta E^1$, $K_3\delta E^3$ and the total extra-stabilization ($\delta E_{st} = k_1\delta E^1 + k_3\delta E^3$) values for different 4f - configurations.

Table 3

**A Variation in the proton ligand constant ($\log\beta^H$), for some of the O-O and O-N donor ligands**

| L | Log $\beta^H$ | L | Log $\beta^H$ |
|---|---|---|---|
| ac L1 | 4.56 | diac amdieth L36 | 21.07 |
| me-o-ac L2 | 3.32 | dicarbome edta L37 | 20.96 |
| gly L3 | 13.93 | me-NTA L38 | 23.12 |
| thio gly L4 | 13.54 | diam OH PDSA L39 | 22.88 |
| lac L5 | 3.63 | diam-PDSA L40 | 23.26 |

A perusal of the effective atomic number vs partial charge [6] plots reveal a crowding around Holomium and Eribium for ligands with lesser value of the partial charges, whereas ligands with higher partial charge have shown a drift towards lighter lanthanides. An almost linear decline from lower partial charge to higher partial charge justify the validity of the proposed hypothesis.

There are, however, some cases of deviation from the expected trend as may be observed in case of O-O donors [7-9]. The accumulation or crowding around Ho (III) and Er(III) for ligands with higher partial charge may be due to the stabilization of complex. These may attribute to the involvement of factors other than electrostatic.



Scanned By Scanner Go

ISSN: 2394-3580
**Swadeshi Research Foundation**
A Monthly Journal of Multidisciplinary
Vol. – 5, No. - 9 JULY 2018
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-3.9 Research Journal

Fig 2: Variation in the values and effective atomic number for the O-N donor ligands, (Y Axis Scale modified to avoid outliers values)

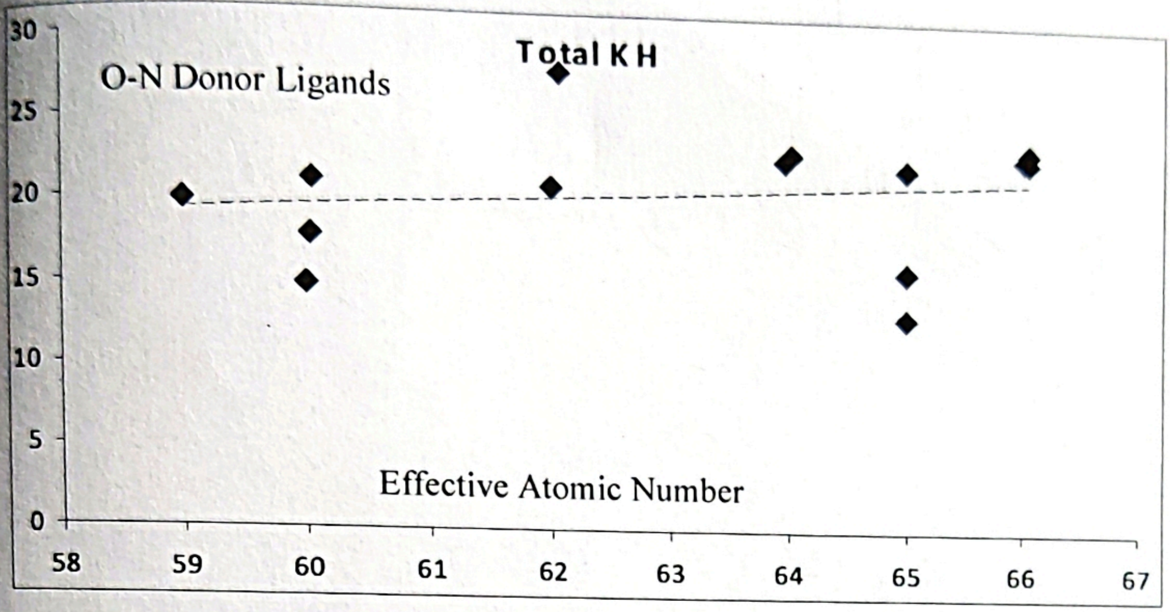


**Result** :- The plots show almost regular decline towards lighter lanthanides with decreased log $\beta^{H}$ values. Certain deviation for some ligands may be on account of some specific structural features and/or steric factors operative in such cases. A close perusal of figures ( Fig. 2 ) show that in case of O-O donor the nature of the bond is expected to be more ionic. The softer bases have shown a shift in Y(III) only up to Gd(III), where as in case of O-N complexes, ligands have shown a drift in Y(III) more towards Pr(III) –Nd(III). This may attribute to their mixed donor type and multidentate nature.

**References :**

1. Klopmann G., J. Am. Chem. Soc., 1968, **90**, 223.
2. Singh P. P., Pathak L.P. and Shrivastava S.K., J. Inorg. Nucl. Chem., 1980, **42**, 521;1984, **23A**, 853.
3. Singh P.P., J. Scoi. Ind. Res., 1983, **42**, 140.
4. Huheey J.E., Inorganic Chemistry, Principle Structure and Reactivity, III Edn., Harpen International education, Cambridge, 1983 p.146.
5. Jorgensen C.K., Acta Chem. Scand.,1955, **9**, 116
6. Poluekov N.S., Meshkova S.V. and Oksinenko I.I., Dok. A Acad. SSSR, 1982, **267(6)**, 1378.
7. Spitsyn V.I., Vokhmin V.G. and Ionora G.V., Int. Rev. Phys. Chem. 1985, **4 (1)**, 57.
8. Drago R.S., Physical methods in Inorganic chemistry [Affiliated East West Press Pvt. Ltd. 1965, Ch6, 147.
9. Limaye S.N., "Solution stabilities of Lanthanide complexes and Tetrad effect: A nephelauxetic Phenomonon", Dsc. Thesis 1993, Dr. H.S. Gour University, Sagar (M.P).; Limaye S.N., Bansod Sarika, Khan N., Vishwakarma P., Pownikar R., J. Institution Chemists (India),2008, In press (MSS 221).



Scanned By Scanner Go